IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

फर्रुखाबाद में स्वतंत्रता आंदोलन और महिलाएं

[1]प्रिया यादव, [2]प्रोफेसर प्रीति त्रिवेदी

[1]शोध छात्रा , इतिहास विभाग आचार्य नरेन्द्र देव नगर निगम महिला महाविद्यालय कानपुर।

[2]प्रोफेसर, इतिहास विभाग आचार्य नरेन्द्र देव नगर निगम महिला महाविद्यालय कानपुर।

शोध

प्रस्तावना

भारत के स्वतंत्रता आंदोलन एक लंबे समय तक चलने वाले बहु आयामी एवं बहु स्तरीय संघर्ष के रूप में देखा जा सकता है। इस आंदोलन के दौरान समाज के विभिन्न वर्गों ने अपनी भूमिका निभाई। भारत की स्वतंत्रता आंदोलन की चर्चा के दौरान प्राय पुरुषों के नाम प्रमुख रूप से देखे जाते हैं, परंतु पुरुषों के साथ-साथ महिलाओं के योगदान को हम पीछे नहीं छोड़ सकते हैं। उनके योगदान को कम उजागर किया गया है। या यूं कह सकते हैं की स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की भूमिका से संबंधित विषय पर इतिहासकारों ने कम ध्यान दिया है । अतः यह कहना गलत साबित नहीं होगा की स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान महिलाओं ने भी अग्रिम रूप से कार्य किया है उन्होंने अपना परिवार समाज का दबाव और यहां तक की उन्होंने अपना जीवन भी देश को न्योछावर कर दिया था। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन बड़े-बड़े महानगरों तथा प्रसिद्ध नेताओं तक सीमित न होकर, इसमें छोटी नगरों और गांव की महत्वपूर्ण भूमिका रही। आंदोलन केवल पुरुषों तक सीमित न रहकर महिलाओं द्वारा भी इसमें सक्रिय रूप से भाग लिया गया। फर्रुखाबाद जनपद की महिलाएं भी स्वतंत्रता आंदोलन के संघर्ष में बिल्कुल पीछे नहीं रही। इन महिलाओं ने अपने घरों की चौखट से निकलकर स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान होने वाले अनेक चरणों में भाग लिया और अपने त्याग बलिदान तथा नेतृत्व का परिचय दिया। फर्रुखाबाद जनपद, जो उत्तर प्रदेश में स्थित है, भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में विशिष्ट स्थान रखता है। फर्रुखाबाद नगर सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, व साहित्यिक दृष्टि से समृद्धि तो रहा ही है, इसके साथ ही यहां की जनता ने स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भूमिका अदा की। शोध पत्र का अभिप्राय फर्रुखाबाद जनपद की महिलाओं की स्वतंत्रता आंदोलन में भूमिका का विश्लेषण करना है।

शोध के उद्देश्य

1. **फर्रुखाबाद जनपद में स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान की पृष्ठ की भूमिका अध्ययन करना।**
2. **फर्रुखाबाद में स्थानीय महिलाओं के योगदान का विश्लेषण करना।**
3. **फर्रुखाबाद में महिलाओं के योगदान तथा उनके सामाजिक सांस्कृतिक प्रभाव का अध्ययन करना।**
4. **संस्कृत परिपेक्ष का विश्लेषण करना।**
5. **अंततः कैसे यह शोध पत्र भविष्य के लिए एक प्रेरणा हो सकता है।**

मुख्य शब्द

ऐतिहासिक सांस्कृतिक और साहित्यिक।

परिचय (Introduction)

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

फर्रुखाबाद जनपद की स्थापना 18वीं शताब्दी के दौरान मुगल बादशाह फर्रुखाशियर के शासन के दौरान हुई थी। फर्रुखाबाद नगर अपने व्यापार, संस्कृति और शिक्षा के लिए प्रसिद्ध रहा है। अतीत में यह जनपद कन्नौज जनपद का भाग था, किंतु बाद में से कन्नौज से विभाजित कर एक अलग जनपद के रूप में स्थापित किया गया। भारत में स्वतंत्रता संग्राम के दौरान फर्रुखाबाद की जनता ने औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध विभिन्न आंदोलनों में सक्रिय रूप से भाग लिया।

1857 भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम एवं फर्रुखाबाद जनपद

ऐसा माना जाता है कि 1857 का विद्रोह भारतीय स्वतंत्रता के लिए प्रथम स्वतंत्रता संग्राम था। भारत के अन्य हिस्सों के साथ-साथ फर्रुखाबाद में भी इस विद्रोह की गूंज बड़े स्तर पर सुनाई दी।

- यहां की आम जनता ने अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ बगावत की।
- फर्रुखाबाद के स्थानीय क्रांतिकारियों ने ब्रिटेन के अधिकारियों को चुनौती दी।
- इस आंदोलन के दौरान फर्रुखाबाद के विभिन्न क्रांतिकारियों ने अपने प्राणों की आहुति भी दी।

फर्रुखाबाद जनपद की प्रमुख महिला स्वतंत्रता क्रांतिकारी

- **श्रीमती रामदुलारी देवी**

इनके द्वारा विदेशी वस्त्र बहिष्कार आंदोलन का नेतृत्व किया गया।

- **श्रीमती फूलवती देवी**

इन्होंने विभिन्न क्रांतिकारियों को शरण देने का कार्य किया। इनके द्वारा 1942 के आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया गया तथा ब्रिटिशों के विरोध में इन्होंने पर्चे बांटे।

- **श्रीमती कुंती देवी**

इन्होंने भी क्रांतिकारियों को अपने यहां शरण प्रदान की।

- इसकी अतिरिक्त स्थानीय ग्रामीण महिलाओं के द्वारा गुपचुप रूप से विभिन्न भूमिगत गतिविधियों को अंजाम दिया गया।

- **श्रीमती काशी देवी**

इन्होंने 1921-22 के दौरान होने वाले असहयोग आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया और इस दौरान भी जेल भी गई।

- **श्रीमती सुशीला देवी**

1942 के दौरान भारत छोड़ो आंदोलन के समय इन्हें गिरफ्तार किया गया और लंबे समय तक यह कारावास में रही।

- **श्रीमती राम प्यारी देवी** इन्होंने गांव में जाकर विदेशी वस्त्रो का बहिष्कार करने के लिए महिलाओं को संगठित करने का प्रयास किया।

महिलाओं के द्वारा संगठनात्मक रूप से सभा और जुलूसों में भागीदारी की गई । महिलाओं के द्वारा आर्थिक रूप से सहयोग के रूप में स्वदेशी वस्त्र भजन आश्रय उपलब्ध कराना और चंदा के रूप में मदद प्रदान की गई। इन महिलाओं ने त्याग और बलिदान के रूप में अनेक यातनाएं सही इन्होंने जेल यात्राएं और सामाजिक बहिष्कार का सामना किया। इसके अतिरिक्त संस्कृत योगदान के रूप में इन्होंने लोकगीत भजन और राष्ट्रीय गीतों के माध्यम से जनमानस के बीच में चेतना का प्रचार प्रसार किया। स्वतंत्रता आंदोलन में भागीदारी के दौरान महिलाओं के समक्ष अनेक चुनौतियां भी थी जैसे सामाजिक बंधन और भारतीय पितृ सत्तात्मक सोच, इसके अतिरिक्त इन्हे ब्रिटिश सरकार के द्वारा किए गए कठोर दमन का सामना करना पड़ता था।

महिलाओं का स्वतंत्रता आंदोलन में सामाजिक तथा राजनीतिक प्रभाव

स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की सक्रिय योगदान ने फर्रुखाबाद की सामाजिक संरचना पर भी प्रभाव डाला।

1. महिलाओं के द्वारा परिवारों में राष्ट्रीय भावना का वातावरण तैयार किया गया जिस आंदोलन में परिवार के अन्य लोग भी सक्रिय हुए। इससे जनपद के पारिवारिक जीवन में, परिवर्तन आया।
2. महिलाओं की भूमिका से विभिन्न प्रथाएं जैसे पर्दा प्रथा लैंगिक भेदभाव को कमजोर कर सामाजिक चेतना का प्रचार प्रसार किया गया।
3. कुछ महिलाओं के द्वारा स्थानीय स्तर पर अनेक संगठन और कमेटी अंकित की गई जिसमें उन्होंने नेतृत्वकरी भूमिका निभाई।
4. महिलाओं की भागीदारी के कारण आंदोलन जन सामान्य तक पहुंचा और यह जन आंदोलन का रूप लिया।

शोध पद्धति

शोध पत्र में वर्णनात्मक और ऐतिहासिक शोध विधि का प्रयोग किया गया है।

1. प्राथमिक स्रोत primary sources

. प्राथमिक स्रोतों के अंतर्गत विभिन्न स्वतंत्रता सेनानियों की आत्मकथा, सरकारी अभिलेख, विभिन्न समाचार पत्र जैसे अभ्युदय, प्रताप में प्रकाशित समाचार, मौखिक इतिहास इत्यादि शामिल है।

. फर्रुखाबाद जनपद की स्वतंत्रता सेनानी उनके परिवारजनों से संबंधित विभिन्न स्थानीय परंपराएं, लोकगीत, दंत कथाएं किस्से इत्यादि शामिल हैं।

2. द्वितीयक स्रोत के इसके अंतर्गत स्वतंत्रता आंदोलन पर लिखी गई विभिन्न पुस्तक शोध पत्र शोध ग्रंथ का अध्ययन का शामिल है।
3.

साहित्य समीक्षा Litreture review

स्थानीय स्तर पर स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान महिलाओं के योगदान विषय पर स्वतंत्र रूप से बहुत ही काम शोध कार्य हुआ है, इसमें फर्रुखाबाद भी शामिल है। यहां सामान्य रूप से स्वतंत्रता संग्राम के दौरान महिला योगदान के ऊपर उपलब्ध साहित्य का प्रयोग किया गया है।

- **आर सी मजूमदार**

आरसी मजूमदार की पुस्तक the sepoy mutiny and the revolt of 1857

इस पुस्तक में 1857 के स्वतंत्रता आंदोलन को राष्ट्रीय परिपेक्ष में संबंधित किया गया है इससे फर्रुखाबाद के बारे में समझने में भी सहायता मिलती है।

- **बिपिन चंद्र, भारत का स्वतंत्रता संग्राम**

निष्कर्ष

फर्रुखाबाद में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान महिलाओं का योगदान भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास का एक महत्वपूर्ण अंग है।

- 1857 के स्वतंत्रता आंदोलन से लेकर 1942 में होने वाले भारत छोड़ो आंदोलन तक विभिन्न चरणों में महिलाओं ने प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- महिलाएं सत्याग्रह बहिष्कार जुलूस विदेशी वस्त्रो का बहिष्कार और विभिन्न सभाओं में सक्रिय रूप से भागीदार रहीं।
- इस दौरान महिलाएं जेल में भी गई और उन्होंने कारावास की कठिनाइयों को झेला।
- इन महिलाओं ने अपने घर को क्रांतिकारी के लिए आश्रय स्थल के रूप में प्रयोग किया और गुप्त रूप से विभिन्न क्रांतिकारियों की मदद भी की।
- इसके अतिरिक्त उन्होंने महिला शिक्षा समाज सुधार जैसे आंदोलन से जुड़कर राष्ट्रीय आंदोलन में महत्वपूर्ण सहयोगी की भूमिका निभाई।

अंतत यह कह सकती हैं कि फर्रुखाबाद जनपद की महिलाओं ने न केवल स्वतंत्रता आंदोलन को बल प्रदान किया इसके साथ ही सामाजिक परिवर्तन की दिशा में भी महत्वपूर्ण प्रयास किया। उन्होंने आजादी के बाद भी समाज में महत्वपूर्ण सुधार शिक्षा और राजनीति में अपना योगदान दिया।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. बिपिन चंद्र भारत का स्वतंत्रता संग्राम
2. आरसी मजूमदार दिस इस बाय मुटनी एंड द रिवोल्ट ऑफ़ 1857।
3. महात्मा गांधी यंग इंडिया पत्र लेखन का संग्रह
4. जवाहरलाल नेहरू भारत की खोज
5. जिला गजेटियर फर्रुखाबाद
6. दो रामस्वरूप मिश्रा उत्तर प्रदेश में स्वतंत्रता संग्राम
7. डॉ श्याम नारायण पांडे महिला स्वतंत्रता सेनानी।
8. स्थानीय इतिहास फर्रुखाबाद का स्वतंत्रता संग्राम।
9. मौखिक इतिहास एवं लोकगीत।
10. साक्षात्कार और परंपराएं।
11. नेशनल आर्काइव्स ऑफ़ इंडिया स्वतंत्रता आंदोलन से संबंधित विभिन्न दस्तावेज।
12. डॉ रामकृष्ण राजपूत कीर्ति गाथा मुक्ति संग्राम की।